29

कुछ अनोखा करने की मांग

(12:38-50)

यीशु के अधिकार पर बहस यहूदी अगुओं के चिह्न की मांग करने पर चरम तक पहुंच गई। न तो उसके आश्चर्यकर्मों से और न उसके तर्कों से ही वे संतुष्ट हो सके। वे और भी बड़ा प्रमाण चाहते थे कि वह परमेश्वर की ओर से आया और ईश्वरीय अधिकार से काम कर रहा है।

यहूदी अगुओं की विनती (12:38-42)

[38]इस पर कितने शास्त्रियों और फरीसियों ने उससे कहा, ''हे गुरु, हम तुझ से एक चिह्न देखना चाहते हैं।'' [39]उस ने उन्हें उत्तर दिया, ''इस युग के बुरे और व्यभिचारी लोग चिह्न ढूंढते हैं, परन्तु योना भविष्यवक्ता के चिह्न को छोड़ कोई और चिह्न उनको न दिया जाएगा।'' [40]योना तीन रात-दिन जल-जन्तु के पेट में रहा, वैसे-ही मनुष्य का पुत्र तीन रात-दिन पृथ्वी के भीतर रहेगा। [41]नीनवे के लोग न्याय के दिन इस युग के लोगों के साथ उठकर उन्हें दोषी ठहराएंगे, क्योंकि उन्होंने योना का प्रचार सुनकर, मन फिराया; और देखो, यहां वह है जो योना से भी बड़ा है। [42]दक्षिण की रानी, न्याय के दिन इस युग के लोगों के साथ उठकर उन्हें दोषी ठहराएगी, क्योंकि वह सुलैमान का ज्ञान सुनने के लिए पृथ्वी के छोर से आई, और देखो; यहां वह है, जो सुलैमान से भी बड़ा है।

आयत 38. यहूदी अगुवे चंगाई के और दुष्टात्माओं को निकालने के यीशु के आश्चर्यकर्मों से अप्रभावित रहे थे। शायद जो कुछ उस ने किया था उन्हें इसकी परवाह नहीं थी, क्योंकि उस समय ऐसे कई धोखेबाज थे, जो लोगों को यह विश्वास दिलाकर कि वे अद्‌भुत काम कर सकते हैं, उन्हें ठगते थे (देखें प्रेरितों 8:9-13; 13:6-11; 19:13-20)। उन्होंने यीशु से एक **चिह्न** (*sēmeion*) मांगा। ''चिह्न'' आश्चर्यकर्म ही था, जिससे पता चल सकता था कि कोई व्यक्ति परमेश्वर की ओर से भेजा गया है (मरकुस 16:14-18; यूहन्ना 1:29-34; 3:2; 20:30, 31)। चिह्न सच्चाई के विषय में चेतावनी और पुष्टि का काम भी करते थे (न्यायियों 6:17, 18, 36-40; यशायाह 7:10-17; इब्रानियों 2:1-4)। अपनी पूरी सेवकाई में यीशु ने दर्शकों की विनती पर मनोरंजन के लिए अपने आश्चर्यकर्मों का इस्तेमाल किए जाने से इन्कार किया। उसके विचार से ऐसे दिखावे करना परमेश्वर की ''परीक्षा'' करने जैसा होगा (देखें 4:5-7; KJV)।

कठोर मन **फरीसियों** ने यीशु के साथ उसी प्रकार से व्यवहार किया, जैसे फिरौन ने मूसा के साथ किया था (निर्गमन 4-14); उन्होंने आश्चर्यकर्म के उन चिह्नों को नकार दिया, जो मसीह ने उनके बीच में पहले किए थे। यहां पर फरीसी किसी ऐसे चिह्न की मांग करते लग रहे थे, जिसे नकारा न जा सके कि यीशु परमेश्वर की सामर्थ और उस की स्वीकृति से काम कर रहा है। अन्य

वचनों में इसे ''स्वर्गीय चिह्न'' कहा गया है (मरकुस 8:11; लूका 11:16)। शायद वे स्वर्ग से मन्ना (निर्गमन 16:1-36), सूर्य के ठहर जाने (यहोशू 10:12-14) या परमेश्वर के आकाश से आग भेजने (1 राजाओं 18:30-40) जैसी कोई बात देखना चाहते थे। इसमें संदेह है कि यदि वह उनकी विनती मान लेता तो फरीसी यीशु में विश्वास ले आते। पौलुस ने बाद में ऐसे चिह्न मांगने की यहूदियों की प्रवृत्ति पर टिप्पणी की (1 कुरिन्थियों 1:22)।

आयतें 39, 40. यीशु ने अपने ही समय में लोगों को **बुरे और व्यभिचारी लोग** कहा। वे ''बुरे'' इसलिए थे क्योंकि वे ''नैतिक रूप से भ्रष्ट'' थे। आत्मिक रूप में कहें कि वे ''व्यभिचारी'' इस कारण थे क्योंकि वे परमेश्वर के साथ बेवफ़ा थे। इस्राएल के याहवेह के साथ अपनी वाचा तोड़ने के वर्णन के लिए पुराने नियम में बार-बार इस भाषा का इस्तेमाल किया गया (यशायाह 50:1; यिर्मयाह 3:8; 13:27; 31:32; यहेजकेल 16:32-43; होशे 2:1-20)। यही शब्दावली बेवफ़ा मसीही लोगों पर लागू की जा सकती है (याकूब 4:4) क्योंकि कलीसिया मसीह की दुल्हन है (इफिसियों 5:22-33)।

यीशु ने चाहे विशेष **चिह्न** की उनकी विनती ठुकरा दी, पर उस ने उनसे वायदा किया कि उन्हें **योना भविष्यवक्ता का चिह्न** दिया जाएगा। पुराने नियम के भविष्यवक्ता के अनुभव ने मसीह की मृत्यु, गाड़े जाने और जी उठने के रूपक का काम करना था। जिस प्रकार **योना तीन दिन तीन रात** बड़ी मछली के पेट में रहा था (योना 1:17), वैसे ही यीशु ने इतने ही समय के लिए **पृथ्वी के भीतर** रहना था। योना ने जब प्रार्थना की तो रूपक के रूप में उस ने अपने आपको ''अधोलोक के उदर'' में होना बताया (योना 2:2)। इसी प्रकार यीशु ने सचमुच में ज़मीन में गाड़े जाना था (देखें इफिसियों 4:9)।

इस वचन से कई परेशानियां खड़ी हो गईं। पहली तो यह कि KJV बाइबल में कहा गया है कि योना ''व्हेल के पेट में'' था। यह तर्क दिया गया है कि व्हेल मछलियां चाहे संसार की सबसे बड़ी स्तनधारी जीव हैं पर उनके पेट इतने छोटे होते हैं कि तीन दिन तक कोई आदमी उस में जीवित नहीं रह सकता। *Kētos* शब्द जिसका अनुवाद NASB में भी जल जन्तु के रूप में हुआ है, का अर्थ ''अज्ञात किस्म'' का समुद्री जन्तु है।[1] जैसा कि KJV में इसका अनुवाद है, आवश्यक नहीं कि इसका अर्थ व्हेल ही हो। इससे भी बढ़कर अब यह एक प्रमाणित तथ्य है कि कुछ बड़े-बड़े समुद्री प्राणी पूरे आदमी को निगलने में सक्षम होते हैं। इसमें स्पर्म व्हेल, व्हेल शार्क और सफेद शार्क शामिल हैं। समुद्री प्राणियों की ऐसी प्रजाति को पहचानना जिसे ''यहोवा ने ... ठहराया था कि योना को निगल ले'' (योना 1:17) न तो सम्भव है और न आवश्यक।

दूसरी परेशानी वाली बात यह है कि यीशु ने जमीन के अन्दर अपने **तीन रात दिन** होने की घोषणा की। उस की बात की अलग-अलग व्याख्याएं दी जा चुकी हैं। एक व्याख्या में इस बात पर ज़ोर देते हुए कि फसह के पहले उस विशेष शुक्रवार को ''विशेष सब्त'' के रूप में मनाया गया था, यीशु को शुक्रवार के बजाय गुरुवार को क्रूस पर चढ़ाया गया था। परन्तु इस विचार से तीन पूरे दिन कम पड़ जाएंगे। इस समस्या को सुधारने के लिए यह सुझाव दिया गया है कि क्रूस पर चढ़ाया जाना वास्तव में बुधवार के दिन हुआ था। यह विचार प्रभु को तीन पूरे दिन और तीन रातें जमीन के अन्दर रखता है। तौभी इस सुझाव में इतनी समस्याएं हैं कि इसे गम्भीरता से नहीं लिया जा सकता। इसके अलावा यहूदियों का ''तैयारी का दिन'' (*paraskeuē*) अर्थात जिस

दिन मसीह मरा, का संकेत देता शब्द है (मरकुस 15:42, 43; लूका 23:46, 54; यूहन्ना 19:14, 30, 33) का इस्तेमाल आधुनिक यूनानी भाषा में केवल ''शुक्रवार'' का अर्थ देने के लिए किया जाता है। वास्तव में तीन दिन और तीन रातों के सही-सही क्रम में यीशु की बात से मेल खिलाने का कोई भी प्रयास बेकार है। इस चिह्न का कोई भी अक्षरश: ढंग स्पष्टतया असम्भव है।

इस समस्या की बेहतरीन व्याख्या के लिए ''तीन रात दिन'' अभिव्यक्ति का अर्थ किसी दिन या रात का कोई भी भाग है। दिन के किसी भी भाग को पूरे दिन के रूप में मानते हुए यहूदी साहित्य में इसे ऐसे ही देखा जाता है (उत्पत्ति 42:17, 18; 1 शमूएल 30:12, 13; 1 राजाओं 20:29; 2 इतिहास 10:5, 12; एस्तेर 4:16; 5:1)।[2]

यदि हम दिन या रात के किसी भाग के ढंग को पूरा दिन या रात मानने का ढंग भी अपनाएं तो भी केवल दो ही रातें बनेंगी। इसलिए प्रमाण के प्रकाश में हमें भाषा पर अधिक दबाव नहीं देना चाहिए। सुसमाचार के लेखकों ने ''तीसरे दिन'' (16:21; 17:23; 20:19) और ''तीन दिन के बाद'' (27:63, 64; मरकुस 8:31; 9:31; 10:34) वाक्यांशों का इस्तेमाल अदल-बदल कर किया है।

पवित्र शास्त्र यह स्पष्ट कर देता है कि योना मछली के पेट में रहते समय शारीरिक रूप में मरा नहीं था, क्योंकि वह मछली के पेट के अन्दर परमेश्वर से प्रार्थना कर रहा था (योना 2:1)। योना को मरने की आवश्यकता नहीं थी कि यीशु अपने स्वयं के पुनरुत्थान के रूपक के लिए उस भविष्यवक्ता के अनुभव का इस्तेमाल करे। यीशु ने केवल इतना कहा कि जैसे योना ''तीन रात दिन तक मछली के पेट में रहा'' और फिर जीवित बाहर आ गया, वैसे वह भी पृथ्वी के भीतर रहेगा और जीवित बाहर आ जाएगा।

आयत 41. मछली के पेट में अपने अनुभव के बाद **योना** ने **नीनवे** में अर्थात उन लोगों में प्रचार किया, जो उसके समय के सबसे दुष्ट लोग थे (योना 1:2)। नीनवे एक अन्यजाति नगर था, जो अश्शूर की राजधानी था। नीनवे के लोग यीशु के समय के दुष्ट यहूदी **लोगों** को **दोषी** कैसे ठहरा सकते थे? इस संदर्भ में, ''दोषी'' शब्द का अर्थ ''न्याय के लिए आधार देना'' है।[3] जब योना अन्त में परमेश्वर द्वारा दी गई उस आज्ञा के अनुसार नीनवे में जाकर प्रचार करता है कि ''अब से चालीस दिन के बीतने पर नीनवे उलट दिया जाएगा'' (योना 3:4), तो राजा से लेकर रंक तक सबने टाट पहनकर राख मल ली और पश्चात्ताप किया (योना 3:5-10)। यीशु जो **योना से भी बड़ा है**, आया था; परन्तु उस की पीढ़ी के लोगों ने उस का प्रचार सुनकर मन नहीं फिराया। ''से भी बड़ा'' के लिए यूनानी शब्द (*pleion*) चाहे अलिंगी शब्द है पर सम्भवतया यह मसीह के लिए है (12:6 पर टिप्पणियां देखें)। यह विडम्बना ही है कि योना के **प्रचार** में उसके साथ आश्चर्यकर्म नहीं हुए पर फिर भी लोगों ने उस पर विश्वास किया, जबकि मसीह के प्रचार के साथ कई आश्चर्यकर्म किए गए पर लोगों ने इसे नकार दिया।

आयत 42. एक बार फिर यीशु ने अपने सुनने वालों को विश्वास दिलाने के लिए एक अन्यजाति का उदाहरण इस्तेमाल किया। **दक्षिण की रानी** 1 राजाओं 10 वाली ''शीबा की रानी'' को कहा गया है। प्राचीन देश शीबा स्पष्टतया दक्षिणी अरब में, यरूशलेम के दक्षिण पूर्व में लगभग 1,200 मील था। उस ने उस **युग के लोगों** को **दोषी** क्यों ठहराना था? वह **सुलैमान का ज्ञान सुनने के लिए** और उसके राज्य की शान देखने के लिए इतनी दूर से आई थी (1 राजाओं

10:1-10; देखें 4:34), परन्तु यीशु के युग के लोग उसे नहीं पहचान पाए थे कि वह कौन है या उसके ज्ञान को नहीं मान पाए थे। उन्होंने उस की शिक्षा को सुनने या मानने का कोई प्रयास नहीं किया। तटस्थ विशेषण *pleion* का इस्तेमाल करने के बाद यीशु ने ज़ोर देकर कहा कि वह **सुलैमान से भी बड़ा** है (12:6, 41 पर टिप्पणियां देखें)। देहधारी हुए परमेश्वर के रूप में यीशु का ज्ञान प्राचीन समयों से इस्राएल के सबसे बुद्धिमान राजा से कहीं बढ़कर था।

उस बुरी पीढ़ी के विषय में एक दृष्टांत (12:43-45)

43"जब अशुद्ध आत्मा मनुष्य में से निकल जाती है, तो सूखी जगहों में विश्राम ढूंढ़ती फिरती है, और पाती नहीं। 44तब कहती है, 'मैं अपने उसी घर में जहां से निकली थी, लौट जाऊंगी।' और लौटकर उसे सूना, झाड़ा-बुहारा और सजा-सजाया पाती है। 45तब वह जाकर अपने से और बुरी सात आत्माओं को अपने साथ ले आती है, और वे उस में बैठकर वहां वास करती हैं, और उस मनुष्य की पिछली दशा पहले से भी बुरी हो जाती है। इस युग के बुरे लोगों की दशा भी ऐसी ही होगी।"

आयतें 43-45. बुरी आत्माओं के बारे में यीशु का दृष्टांत शास्त्रियों और फरीसियों के लिए था (12:38)। वे अपने बाहरी रूप को साफ़ करने के प्रति सचेत थे, परन्तु उन्हें अपने भीतर की इतनी चिन्ता नहीं थी (23:25-28)। आत्मिक दिखने के लिए तो वे बड़ा यत्न करते थे, पर परमेश्वर की व्यवस्था की जीवन बदलने वाली शर्तों की उपेक्षा करते थे। उन्होंने पुदीने, सौंफ और ज़ीरे का दसवां अंश देने की "छोटी-छोटी बातों में महारत पा ली थी" पर न्याय, दया और विश्वास की महत्वपूर्ण बातों को नज़रअन्दाज़ कर दिया था (23:23)।

यीशु की चेतावनी यह थी कि शास्त्रियों और फरीसियों ने चाहे अपने घरों को साफ़ करके उन्हें खाली कर दिया था, परन्तु वही बुराई जो उन्होंने निकाली थी, लौटकर पहले से भी बुरी हो जानी थी। **मनुष्य** में से **अशुद्ध आत्मा** के निकल जाने का उदाहरण इस्तेमाल करते हुए यीशु ने अपनी बात कही। **निकल जाती है** (*exerchomai*) क्रिया शब्द का इस्तेमाल आमतौर पर किसी में से दुष्टात्मा के निकलने के संदर्भ में इस्तेमाल किया जाता है (17:18; मरकुस 1:25, 26; 5:8; 7:29; 9:25)। इस आदमी में से निकलकर अशुद्ध आत्मा नये घर की तलाश में चली गई। नये नियम के काल के यहूदी, अरबी और फरीसी लोगों का मानना था कि **सूखी जगहें** (मरुस्थल) दुष्टात्माओं का बसेरा होती हैं (देखें प्रकाशितवाक्य 18:2)।[4]

यीशु के दृष्टांत वाली दुष्टात्मा को रहने का कोई उपयुक्त स्थान न मिला और वह अपने पहले वाले घर में लौट आई और उसे **सूना, झाड़ा बुहारा और सजा सजाया** पाया। दुष्टात्मा न केवल उस में रहने वापस आ गई, बल्कि वह अपने से भी **और बुरी** अन्य सात आत्माओं को ढूंढ़कर साथ ले आई और उन्होंने उस बेचारे के शरीर में पक्का-ठिकाना बना लिया। यीशु ने कहा कि **उस मनुष्य की पिछली दशा पहले से भी बुरी** [हो] **गई**। शायद यह उस ज़माने की आम कहावत है (27:64; 2 पतरस 2:20)। इतिहास से पता चलता है कि इस्राएल में मसीह को ठुकराने वाले लोग अपने विद्रोह के कारण और भी बुरे हो गए। अन्त में उनका ठुकराना सत्तर ईस्वी में यरूशलेम और मन्दिर के विनाश का कारण बना (देखें 24:1-28)।

एक उपसंहार: यीशु के असली भाई बहन (12:46-50)

[46]जब वह भीड़ से बातें कर ही रहा था, तब उस की माता और भाई बाहर खड़े थे, और उससे बातें करना चाहते थे। [47]किसी ने उससे कहा, ''देख तेरी माता और तेरे भाई बाहर खड़े हैं, और तुझ से बातें करना चाहते हैं।'' [48]यह सुनकर उस ने कहने वाले को उत्तर दिया, ''कौन है मेरी माता? और कौन हैं मेरे भाई?'' [49]और अपने चेलों की ओर अपना हाथ बढ़ाकर कहा, ''देखो, मेरी माता और मेरे भाई ये हैं। [50]क्योंकि जो कोई मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चले, वही मेरा भाई, और बहिन और मेरी माता है।''

इस घटना के समानान्तर विवरण मरकुस 3:31-35 और लूका 8:19-21 में मिलते हैं। कहानी सुसमाचार में इन विवरणों में अलग-अलग जगह घटी, इस कारण यीशु की सेवकाई में इसके कालक्रम का सही-सही स्थान पता नहीं है। यह घटनाक्रम ठुकराए जाने के विषय को जारी रखता है और उस अध्याय का निष्कर्ष देता है, जिसमें यीशु के इर्द गिर्द के वैर को उजागर किया गया था।

आयत 46. यीशु **भीड़ से बातें कर ही रहा था** कि **उस की माता और भाई** उससे मिलने के लिए आ गए, परन्तु उन्हें उस तक पहुंचने में कठिनाई हो रही थी (लूका 8:19)। यीशु के सांसारिक पिता यूसुफ़ का उल्लेख नहीं है, इस कारण अधिकतर लोगों का मानना है कि वह इस समय तक पहले ही मर चुका था (देखें यूहन्ना 19:25-27)।

अपने पहलौठे अर्थात यीशु को जन्म देने के बाद मरियम के और भी कई बच्चे हुए जिनमें याकूब, यूसुफ, शमौन और यहूदा नामक चार पुत्र और कम से कम दो पुत्रियां थीं (13:55, 56)। कइयों का कहना है कि मरियम के बच्चे किसी दूसरी स्त्री से यूसुफ की सन्तान थे या वे मसीह के रिश्ते में भाई लगते थे, परन्तु इन दावों में इस वचन में बताई गई स्पष्ट सच्चाई नहीं है। यह सुझाव कि ''भाई'' रिश्तेदारी में से हो सकते हैं ''भाइयों'' के लिए इस्तेमाल हुए यूनानी शब्द (*adelphos*) का स्पष्ट रूप में खण्डन होता है। नये नियम में इस शब्द का इस्तेमाल कभी भी ''रिश्ते में भाई'' के लिए नहीं हुआ है। एक अलग यूनानी शब्द, *anepsios*, का अर्थ है ''cousin'' अर्थात रिश्ते में भाई या बहन। इसका इस्तेमाल यूहन्ना मरकुस और बरनबास के सम्बन्ध के वर्णन के लिए किया गया है (कुलुस्सियों 4:10)।

यीशु का परिवार ठीक-ठीक **उससे बातें** क्यों करने के लिए आया यह नहीं बताया गया। मरकुस ने इस घटना के थोड़ा पहले लिखा है कि ''उसके कुटुम्बी ... कहते थे, कि उस का चित्त ठिकाने नहीं है'' और वे ''उसे पकड़ने के लिए निकले'' थे (मरकुस 3:21)। इसलिए यह मान लिया जाए कि वे उसे अपना प्रचार बन्द करने के लिए मनाकर घर ले जाने के प्रयास में आए थे। यूहन्ना ने लिखा कि ''उसके भाई भी उस पर विश्वास नहीं करते थे'' (यूहन्ना 7:5)। परन्तु अन्त में शायद पुनरुत्थान के बाद वे विश्वासी बन गए थे (प्रेरितों 1:14; 1 कुरिन्थियों 9:5; 15:7)। उनमें से दो भाइयों अर्थात याकूब और यहूदा ने पुस्तकें लिखीं, जिन्हें उन्हीं के नाम से जाना जाता है।

आयत 47. वे यीशु के पास नहीं पहुंच सकते थे, इसलिए स्पष्टतया परिवार ने यह बताने के लिए संदेश भेजा कि वे **बाहर खड़े** हैं और उससे बात करना चाहते हैं। उन्हें लगा होगा कि

वह जो कुछ कर रहा है, उसे तुरन्त बन्द करके उनके पास आ जाएगा, परन्तु वह नहीं आया। कुछ यूनानी हस्तलिपियों में यह आयत नहीं है (देखें RSV)। उन हस्तलिपियों की इस चूक का ही कारण हो सकता है, जिसमें एक शास्त्री की नज़र *lalesai* शब्द से हट गई जिस कारण इसका अनुवाद आयत 46 के अन्त में ''बातें करना'' की तरह ही आयत 47 के अन्त में उसी शब्द के साथ जोड़ा गया।[5]

आयतें 48-50. प्रभु ने यह सवाल करते हुए जवाब दिया कि **''कौन है मेरी माता? और कौन हैं मेरे भाई?''** उनकी विनती पर यीशु की प्रतिक्रिया से अपनी माता या अपने भाइयों के प्रति उसके अनादर का पता नहीं चलता। यीशु के मन में अपनी माता के प्रति अथाह सम्मान था और उसे उस की भलाई की चिन्ता थी (लूका 2:51; यूहन्ना 2:3-11; 19:25-27; देखें मत्ती 15:3-6) और आमतौर वह इसे दिखाता था। परन्तु इस अवसर पर उस की ईश्वरीय और मानवीय वफ़ादारियों के बीच एक उलझन पड़ गई और वह तुरन्त अपनी प्राथमिकता के रूप में ईश्वरीय की ओर खिंच गया।

यीशु ने **अपने चेलों की ओर हाथ** बढ़ाते हुए घोषणा की कि वे ही उस का असली परिवार हैं। फिर उस ने कहा कि जो भी कोई [उसके] **स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चले** (देखें 7:21) उस का उसके साथ पारिवारिक सम्बन्ध है: **''वही मेरा भाई, बहन और मेरी माता है।''** इस सूची में ''पिता'' शब्द नहीं है क्योंकि यह नाम परमेश्वर के लिए सुरक्षित है (23:9; इफिसियों 4:4-6)। ''बहन'' और ''माता'' का हवाला इस बात को दिखाता है कि अपने समकालीनों के विपरीत यीशु अपने चेले बनने के लिए स्त्रियों को बुलाता था। स्त्रियां अपने वित्त से यीशु की सहायता करती थीं (लूका 8:1-3) और वह उन्हें सिखाने से हिचकिचाता नहीं था (लूका 10:38-42; यूहन्ना 4:7-30)।[6]

इन आयतों से दो महत्वपूर्ण सच्चाइयां ली जा सकती हैं; पहली यह कि यीशु ने अपने सांसारिक परिवार को परमेश्वर के ठहराए हुए मिशन से ध्यान हटाने की अनुमति नहीं दी (देखें यूहन्ना 2:4; 7:6)। दूसरा, आत्मिक बन्धन ऐसा है, जो किसी के अपने शारीरिक परिवार से भी मज़बूत है (देखें 8:21, 22; 10:34-37)।

❖❖❖❖❖ **सबक** ❖❖❖❖❖

सबसे बड़ा चिह्न (12:39, 40)

मसीह का पुनरुत्थान सबसे बड़ा चिह्न था, क्योंकि इससे साबित हो गया कि वह ही परमेश्वर का पुत्र था। पौलुस ने लिखा कि यीशु ''मरे हुओं में से जी उठने के कारण सामर्थ के साथ परमेश्वर का पुत्र ठहरा है'' (रोमियों 1:4)। मसीही विश्वास पुनरुत्थान की सच्चाई पर टिका है; हम जी उठे उद्धारकर्त्ता की सेवा करते हैं, जिसे परमेश्वर के दाहिने हाथ ऊंचा किया गया था! यह तथ्य कि यीशु कब्र में से बाहर आया, हमें गारंटी देता है कि हम भी उसके वापस आने के समय शारीरिक पुनरुत्थान का अनुभव करेंगे (1 कुरिन्थियों 15:20-28, 50-58)।

डेविड स्टिवर्ट

योना की ऐतिहासिकता (12:40)

गत दो शताब्दियों से कई उदारवादी विद्वानों ने योना की ऐतिहासिकता को नकारा है। वे इस कहानी को केवल दंतकथा, एक सांकेतिक दृष्टांत या रूपक के रूप में देखते हैं। परन्तु ये तरीके योना की पुस्तक को सही ढंग से पढ़ने का ढंग नहीं हैं। इसके अलावा वे मत्ती 12:40 में यीशु की बात को नज़रअन्दाज़ करते हैं। उस ने अपने स्वयं के पुनरुत्थान के रूप में योना के ऐतिहासिक विवरण का इस्तेमाल किया। यदि योना को सचमुच में समुद्री जीव ने नहीं निगला था तो इससे यही संकेत मिलेगा कि प्रभु झूठा था; इसके अलावा यह उसके पुनरुत्थान की विश्वसनीयता को भी कमज़ोर कर देगा। बिना पुनरुत्थान के, मसीही विश्वास की खड़े होने के लिए टांगें नहीं हैं। पौलुस ने लिखा है, ''यदि मसीह नहीं जी उठा, तो तुम्हारा विश्वास व्यर्थ है; और तुम अब तक अपने पापों में फंसे हो'' (1 कुरिन्थियों 15:17)।

डेविड स्टिवर्ट

शैतान को घर वापसी पसन्द है (12:43-45)

यीशु के समय में लोग दुष्टात्माओं से अच्छी तरह परिचित थे। 12:43-45 में खाली घर की तुलना खाली जीवन से करते हुए उस ने दुष्टात्माओं का एक दृष्टांत बताया। शैतान को ऐसी परिस्थितियों में काम करना अच्छा लगता है। बाइबल की कहानी में पहले वह धोखेबाज ''जितने बनैले पशु थे, उन सब में धूर्त [चतुर; ASV]'' के रूप में आया (उत्पत्ति 3:1)। उस का सबसे बड़ा धोखा अपने आपको दिखाई दिए बिना और गम्भीरता से लिए जाने के बिना इन सब वस्तुओं में मनुष्यों के मामलों को प्रभावित करने की उस की योग्यता है। इस दृष्टांत में यीशु ने शैतान के व्यवहार का एक स्पष्ट उदाहरण दिया। शैतान न केवल वास्तविक है, बल्कि वह अटल भी है। उसे घर वापसी पसन्द है यानी वह किसी खाली जगह (व्यक्ति के जीवन) को भरना पसन्द करता है।

बुराई की जगह भलाई को देना (12:43-45)

याकूब ने लिखा है, ''शैतान का सामना करो, तो वह तुम्हारे पास से भाग निकलेगा'' (याकूब 4:7)। वह थोड़ी देर के लिए भाग सकता है पर उसे यह नहीं भूलेगा कि वह व्यक्ति कहां रहता है! शैतान व्यक्ति को केवल इसलिए भरमाना नहीं छोड़ेगा कि उस ने किसी समय यीशु मसीह के लिए उसे छोड़ दिया था। बुराई को निकालना केवल सकारात्मक भलाई उत्पन्न करने के लिए ज़मीन साफ़ करना है। दृष्टांत वाले दुष्टात्मा ने जब अपने पहले घर को खाली पाया तो वह उस में लौट आई। वह अपने साथ अन्य सात दुष्टात्माओं को भी ले लाई।

कोई भी जगह अधिक समय के लिए खाली नहीं रहेगी। यहां तक कि बुराई को हटा दिए जाने पर इसकी जगह तुरन्त सकारात्मक भलाई को रख दिया जाना चाहिए। बुराई को दूर रखने के लिए परमेश्वर और उस की मंशा के प्रति सक्रिय समर्पण में रम जाना आवश्यक है।

''दुष्टात्माओं'' को कैसे निकालें (12:43-45)

आज दुष्टात्माएं लोगों के शरीरों में वास नहीं करतीं, परन्तु आज भी शैतान हमारे विरुद्ध

अपनी शक्ति और प्रभाव का इस्तेमाल करता है। उस की गतिविधियां कई आयतों में दिखाई गई हैं (लूका 8:12; 2 कुरिन्थियों 2:11; इफिसियों 6:11-16; 1 थिस्सलुनीकियों 2:18; 1 तीमुथियुस 3:6, 7; 2 तीमुथियुस 2:26)। शैतान का सामना किया जाना आवश्यक है (याकूब 4:7; देखें मत्ती 16:21-23; लूका 22:31, 32; इफिसियों 4:27; 1 पतरस 5:8)।

ये ''दुष्टात्माएं'' क्या हैं? (1) छल की दुष्टात्मा, (2) निराशा की दुष्टात्मा, (3) उदासीनता की दुष्टात्मा, और (4) टाल-मटोल की दुष्टात्मा।

हम उन्हें कैसे ''निकाल'' सकते हैं? (1) प्रभु के निकट रहकर, (2) परमेश्वर के लिए व्यस्त रहकर, और (3) आत्मा की तलवार अर्थात परमेश्वर के वचन को पूरी शक्ति से चलाते हुए।

सबसे बड़ी गलती जो हम कर सकते हैं, वह यह है कि हम बुराई को अपने जीवनों में घुसने से रोकने के लिए कुछ नहीं करते। विजय पाने के लिए शैतान को केवल यही चाहिए कि अच्छे लोग आराम से बैठे रहें और उसके विरुद्ध लड़ने के लिए कुछ न करें। यदि हम परमेश्वर के पास भागते हैं, तो शैतान हम से भाग जाएगा।

मरियम की उपासना (12:46-50)

आज कुछ धार्मिक गुटों द्वारा मरियम को महिमा देने की बात अवांछित है और परमेश्वर की निन्दा है। आदि कुंआरी की शिक्षा इसे मान लेती है, क्योंकि मरियम ''परमेश्वर की मां'' थी इसलिए वह स्वयं ईश्वरीय रही होगी और आश्चर्यकर्म के द्वारा उस ने संसार में जन्म लिया होगा। इस गलत अवधारणा के आधार पर, लोग मरियम की उपासना करने लगे हैं और उसे अलौकिक शक्ति मानने लगे हैं। 12:46-50 में यीशु की सेवकाई पर इस अवांछित हमले का वर्णन केवल एक संकेत है कि मरियम को किसी भी दूसरे व्यक्ति से बढ़कर सम्मान नहीं दिया जाना चाहिए।

परमेश्वर का परिवार (12:46-50)

परमेश्वर के परिवार के लोग होना बहुत बड़ी आशीष है। परमेश्वर हमारा पिता है और यीशु हमारा बड़ा भाई (रोमियों 8:14-16; इब्रानियों 2:10-18)। हमें सिखाने, सहायता करने और समझाने के लिए हमारे भाई और बहनें हैं। हम एक-दूसरे के साथ अपनी विजयों और पराजयों को बांट सकते हैं और हम मिलकर आनन्द कर सकते और विलाप कर सकते हैं (रोमियों 12:15)। संकट के समय में चाहे वह आत्मिक हो या शारीरिक, हमें एक-दूसरे का सहारा मिल जाता है (गलातियों 6:1, 2, 10)। परमेश्वर का परिवार हर सदस्य के लिए उपयोगी है। यह उनके लिए जिनका कोई सांसारिक परिवार नहीं है और जिनके परिवार के लोगों का विश्वास उनके साथ मेल नहीं खाता, एक आश्रय है।

डेविड स्टिवर्ट

टिप्पणियां

[1]जेक पी. लुईस, द *गॉस्पल अक्कॉर्डिंग टू मैथ्यू,* भाग 1, द लिविंग वर्ड कमैंट्री (आस्टिन, टैक्सस: स्वीट पब्लिशिंग कं., 1976), 178. [2]टालमुड *पेसाहिम* 4ए; *नाज़िर* 5बी। [3]लुईस, 179. [4]देखें टोबिट 8:3; बारूक का ग्रंथ 4:35. [5]ब्रूस एम. मेज़गर, *ए टैक्सचुअल कमैंट्री ऑन द ग्रीक न्यू टैस्टामेंट* 2रा संस्क. (स्टटगर्ट: जर्मन बाइबल सोसायटी, 1994), 26-27. [6]इसके विपरीत रब्बी लोगों को चेतावनी देते थे, ''स्त्रियों के साथ बहुत अधिक बातें न करो।'' उनका कहना था, ''जितनी अधिक कोई पुरुष किसी स्त्री से बात करेगा, (1) उतना ही वह अपने आपको परेशानी में डालता है, (2) समय बर्बाद करता है जिसका बेहतर इस्तेमाल तौरेत पढ़ने में हो सकता है, और (3) अन्त में गेहन्ना का वारिस बनता है।'' (मिशनाह *अबोथ* 1.5.)